तीर्थंकर महावीर और उनकी सामाजिक क्रान्ति

चन्दनमल वैद

वैशाली के राजकुमार वर्द्धमान एक ऐसे क्रान्ति-दृष्टा युग पुरुष थे जो कठोर साधना के परिणाम स्वरूप केवलज्ञान को प्राप्त कर आत्मविजयी हो महावीर बने जिन परिस्थितियों ने वर्द्धमान को महावीर बनने को प्रेरित किया उनके मूल में मुख्यतः तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियां ही थीं, जिनमें राजनीतिक अस्थिरता, हिंसा, कलह, तथा शोषण पर आधारित समाज व्यवस्था, ईश्वरवाद, पाखंडवाद, अन्ध विश्वास व बलि प्रथा पर आधारित धार्मिक व्यवस्था तथा इनकी प्रतिक्रिया स्वरूप दास प्रथा, भेदभाव पूर्ण वर्ण व्यवस्था का प्राधान्य था जिसके कारण सामाजिक एवम् चारित्रिक मानदण्ड चरमरा रहे थे। राज्य शासक वर्ग में तीव्र विद्वेष के कारण हिंसामय वातावरण व्याप्त था, दासी को पशु तुल्य तथा नारी को भोग्य सामग्री समझा जाता था, जिसके कारण सम्पूर्ण देश और सभ्यता पतन के गर्त में समाती जा रही थी।

वर्द्धमान ने जब यह सब देखा तो उनका मन घृणा और ग्लानि से द्रवित हो उठा और वह राज परिवार छोड़ क्रान्तिपथ पर अग्रसर हो गए। निरन्तर बारह वर्ष तक कठोर साधना के उपरान्त केवलज्ञान को प्राप्त वर्द्धमान ने देश के कौने-कौने में भ्रमण कर जन-मत जाग्रत किया और तत्कालीन समाज में व्याप्त दोष-पूर्ण व्यवस्था के विरुद्ध अहिंसक क्रान्ति का सूत्रपात कर ऐसी सामाजिक क्रान्ति को जन्म दिया जिसने सम्पूर्ण देश की सामाजिक परिस्थितियों को झकझोर कर जन-जन में आत्म विश्वास की लहर जगा दी।

भगवान महावीर ने तत्कालीन समाज में, धार्मिक क्षेत्र में धर्म प्रमुखों द्वारा प्रचलित उन समस्त विचार-धाराओं और अन्ध विश्वासों को खण्डित किया जिसके अनुसार धर्मगुरुओं ने ईश्वरवाद की धारणा प्रचलित कर राजा को ईश्वर का अवतार, ब्राह्मण को ईश्वर का प्रवक्ता तथा पराजित व्यक्ति को दास और विजेता को स्वामी माना जाता था। महावीर ने कहा कि राजा देव या ईश्वरीय अवतार नहीं है, वह एक शक्ति सम्पन्न पुरुष मात्र है। ईश्वर या उसके अवतार जैसी किसी चीज का कोई अस्तित्व नहीं है। विश्व में कोई दूसरी ऐसी शक्ति नहीं है जो व्यक्ति की गतिविधियों को

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शासित या निर्धारित करती हो अथवा संसार को चलाती हो। मनुष्य स्वयं अपना स्वामी है, वह जो कुछ करता है उसका परिणाम उसे स्वयं को ही जन्म जन्मान्तर में भोगना होगा। कोई दूसरी शक्ति उसे इससे मुक्त नहीं करा सकती, इससे तो वह स्वयं के ही सदकर्मों से मुक्ति पा सकता है।

तीर्थंकर महावीर और उनसे पूर्व तीर्थंकरों द्वारा अवतारवाद की धारणा का खण्डन कर उन पर मानवीय मूल्यों की महत्ता, उनके धर्म का विशिष्ट गुण है। अन्य संस्कृतियों में जहां विभिन्न महापुरुषों को धर्म गुरुओं ने ईश्वरवाद के चौखटे में जड़, मानव से अलग कर उन्हें ईश्वरीय अवतार के रूप में प्रतिष्ठित किया और उनके व्यक्तित्व को विकृत कर अवतारवादी ढांचे में जड़ दिया। वहां तीर्थंकर महावीर के अनुयायीयों की यह महत्वपूर्ण उपलब्धि ही कही जायगी कि उन्होंने अपने को इससे मुक्त रख महावीर को तीर्थंकर या महा मानव के रूप में ही प्रतिष्ठित किया जिसके कारण मानवीय मूल्यों की स्थापना में जैन संस्कृति अग्रणी मानी जाती है।

तीर्थंकर महावीर ने तत्कालीन भारत में प्रचलित वर्ण व्यवस्था तथा दास व्यवस्था पर भी प्रहार किया जिसमें मनुष्य की जन्मगत महानता स्थापित होती थी। उन्होंने कहा कि सभी मनुष्य एक से पैदा होते हैं, सभी को अपना विकास करने का समान अधिकार है। मनुष्य की प्रतिष्ठा और स्थान जन्मगत विशेषताओं के आधार पर नहीं वरन उसके गुणों एवम् सदकर्मों पर आधारित हो, इसलिये उन्होंने जन जागृति का माध्यम अपनाया उन्होंने अनेकों शूद्रों को दीक्षित किया तथा दासों को मुक्त कराकर उन्हें सम्मान जनक स्थान दिया। उनके उपदेशों के समय सभी जाति, वर्ग और वर्ण के नर-नारी ही नहीं वरन सभी प्रकार के जीव साथ बैठकर उपदेश सुनते थे। अनेकों नारियों को दीक्षित कर उन्होंने नर के समान सम्मान एवम् स्थान प्रदान किया।

इस प्रकार भगवान महावीर ने साम्प्रदायिक भेदों को समाप्त कर पाखंडवाद व वर्ण एवं वर्ग भेद की जंजीरों को तोड़कर प्राणी मात्र के सहअस्तित्व व लोककल्याण का; तथा मनुष्य की जन्मगत महानता के स्थान पर सदकार्यों से उनकी महानता व ईश्वर सम्बन्धी अवतार वादी विचार के स्थान पर शुद्ध आत्मा ही परमात्मा का विचार देकर मानव धर्म की स्थापना कर मानवीयता को नई दिशा दी।

तीर्थंकर महावीर ने अपने क्रान्तिकारी विचारों के कारण समाज व्यवस्था के सभी कारकों को आन्दोलित कर नवीन स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने प्रत्येक मनुष्य को पुरुषार्थ प्रदर्शित करने को प्रेरित किया तथा श्रम को जीवन का आवश्यक अंग बताते हुए उसकी अनिवार्यता सिद्ध कर तत्कालीन समाज में आर्थिक विषमता के कारण उत्पन्न वर्ग भेद पर भी प्रहार किया जिसके कारण तत्कालीन समाज दो वर्गों में बंट गया था, एक कुलीन तथा शोषक वर्ग और दूसरा निम्न तथा शोषित वर्ग। तीर्थंकर महावीर स्वयं राजपुत्र होने के नाते संग्रहवृत्ति से उत्पन्न दोषों तथा समस्याओं से परिचित थे। इस व्यवस्था के विकल्प में उन्होंने अपरिग्रह दर्शन दे, मनुष्य को अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु परिग्रह व्रत धारण करने की शिक्षा दी।

इस प्रकार जहां तीर्थंकर महावीर ने सामाजिक व्यवस्था में मूलभूत परिवर्तन कर आदर्श समाज की स्थापना पर बल दिया वहां सम्पूर्ण जीवन दर्शन प्रदान कर आदर्श परिवार पर भी बल दिया था तथा ग्रहस्थ एव साधु के लिये प्रथक-प्रथक आचार संहिता दी। उन्होंने इकाई के सुधार पर बल देते हुए प्रत्येक व्यक्ति को दशलक्षण धम तथा पंच महाव्रतों के पालन का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपदेश दे स्वयं अनुशासन बद्ध जीवन पद्धति के पालन का उपदेश दिया। इसके लिये उनके सर्वाङ्गीण शिक्षा पर बल दिया जिसके आधार पर धार्मिक सहिष्णुता की स्थापना तथा आदर्श विश्व का निर्माण हो सकता हैं।

तीर्थंकर महावीर के सिद्धान्त और उपदेश पूर्ण शास्वत एवं मौलिक होने से आज भी उतने ही उपयोगी हैं। जिन-सामाजिक दुर्व्यवस्थाओं ने उन्हें तत्कालीन समाज में सामाजिक क्रान्ति को प्रेरित किया था उनमें से अनेक दोष परिवर्तित परिवेषों में वर्तमान समाज में भी व्याप्त होते जा रहे हैं। आर्थिक असमानता, अस्प्रश्यता एवं भेदभाव, विद्वेष, सामाजिक असंतुलन तथा शोषकवृत्ति आज भी नवीन स्वरूपों में समाज के कोढ़ की तरह विद्यमान है, जिनके विरुद्ध तीव्र किन्तु अहिंसक सामाजिक क्रान्ति की नितान्त आवश्यकता है। युग पुरुष महात्मा गांधी ने तीर्थंकर महावीर के विचारों को नवीन परिवेषों में स्थापित कर वर्तमान भारत में जिस सामाजिक क्रान्ति को जन्म दिया तथा स्वाधीनतोपरान्त हमारे नवीन संविधान, में वर्णित निर्देशक सिद्धान्तों ने जिसे गति दी है, उनकी पूर्ति के लिये तथा आदर्श समाज की स्थापना के लिये आज तीर्थंकर महावीर के सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार की जितनी आवश्यकता है उतनी पहले कभी नहीं थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org